Studies in Indian Place Names (UGC Care Journal)
ISSN: 2394-3114Vol-40, Special Issue-05
NAAC sponsored two days National Conference on New Accreditation Process and Quality Enhancement for rural colleges
Held on 4 and 5th February 2020
Sunderrao Solanke Mahavidyalaya, Majalgaon Dist. Beed, Maharashtra, India. 431 131

हिंदी अध्यापन पद्धति मे आई.सी.टी. का प्रयोग

प्रा.एस.जी.सुरवसे, डॉ.के.बी.गंगणे

1. हिंदी विभाग, सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव
2. हिंदी विभाग अध्यक्ष,सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव

विश्व में ज्ञान का भंडार आधुनिक आई.सी.टी. के माध्यम से हर कोने पहुँच रहा है । मानों आज के आधुनिक साधनों के कारण विश्व एक ग्राम बन गया है । इसका लाभ सभी क्षेत्रों को हो रहा है । इससे हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी कैसे दूर रह सकती है । हिंदी भाषा का प्रसार आधुनिक आई. सी.टी. के जरिये विश्व में हो रहा है ।

हिंदी अध्यापन में आई.सी.टी.के माध्यम से कम समय में ऑडियो, वीडीयो, ओ.एच.पी. आदि माध्यमों का प्रयोग करते हुए । छात्रों को ज्यादा से ज्यासदा ज्ञान दिया जा सकता है । आज के अध्यतन नवा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के जरिये छात्रों को ई-बुक, ई-जर्नल के माध्यम से विश्व में होनेवाले अनुसंधान का लाभ मिलता है ।

हमारी प्राचीन हिंदी अध्यापन पध्दति में इन नये अविष्कारों नें हिंदी समझने और सिखाने की क्रिया में गतिशीलता प्राप्त हुई है । हिंदी के उपन्यास, नाटक, कहानियाँ आदि को कम समय में छात्रों को पढाने में आसानी होती है । तथा अध्यापक जो छात्रों पढाते है । वह सहजता से छात्र समझते हैं । इस लिए शिक्षा पद्धति में आई.सी.टी. अत्यंत प्रभावशाली साबित हुई है ।

1. आई.सी.टी.के माध्यमों सें हिंदी अध्यापन :

अध्यापन में आधुनिक माध्यमों के रूप ओ.एच.पी. का प्रयोग किया जाने लगा । जिसके माध्यम से छात्रों को जाने लगा । जिसके माध्यम से छात्रों को ध्यान पुर्णत: अध्यापक के अध्यापन पर ही होता है । आगे विकसितता के रूप में कम्प्युटर के माध्याम स्लाईड का प्रयोग किया जाने लगा । इससे "शिक्षा क्षेत्र में भी अपनी सार्थकता स्पष्ट की है"[1] शिक्षा के हर विद्या शाखाओं को प्रभावित किया है । इससे हिंदी भाषा अछुती नही रही । बल्की देश और विदेशों में व्यापकता से हिंदी अध्यापन एवं अध्ययन किया जाने लगा ।

हिंदी अध्यापन करते हुए । जैसे प्रेमचंद का गोदान उपन्यास के विभिन्न चरित्र समझने कठिनाई है । किन्तु वीडीओ फिल्म के माध्यम से कम समय में जादा से जादा ज्ञान छात्रों को दिया जाने लगा है । इससे अध्यापन सटिक माध्यम के साथ अग्रेषित होने लगा हैं ।

हिंदी भाषा का प्रयोग अध्यापन और अध्ययन की दृष्टी से विश्व स्तर पर ले जाने के लिए भारत की सुपर कंम्प्युटर के निर्माता सी-डैक ने हिंदी भाषा सीखाने के लिए एक ऐसा बहुआयामी सॉफ्टवेअर विकसित किया है । जिसके जरिय हम न केवल हिंदी की संरचना की बारिकियों को समझ सकते है । बल्की प्रामाणिक उदाहरण और चित्रो की सहायता से हिंदी पढना बोलना और लिखना भी सीख सकते है । हिंदी भाषा का सटिक रूप में सिखने के लिए भाषा प्रयोगशाला के माध्यम से ध्वनि तथा उच्चारण की व्यवस्था के तहत शब्दों का वर्णों का मानक उच्चारण सुना जा सकता है । तथा बाद में आप बोलकर अपनी रिकॉर्ड किई गई वाणी की तुलना मानक के साथ कर सकते है ।

2. पारंपारिक हिंदी अध्यापन में आई.सी.टी.

पारंपारिक हिंदी अध्यापन पध्दति में अध्यापक छात्रों को व्याख्यान पध्दति के माध्यम से पढाने के कारण समय जादा लगता था । तथा छात्रों को ज्ञानर्जन कम होता था । किन्तु आई.सी.टी. का प्रयोग करने के कारण छात्रों को अध्यापन करने में अध्यापक को आसानी होती है । जैसे जयशंकर प्रसाद का चंद्रगुप्त नाटक को वीडीओं ऑडियो फिल्म द्वारा दिखाया जाय तो तत्कालिन स्थिति तथा प्रसार के जो नाटक मंचन करने मे जो कठिनाई है । वह अॅनिमेशन के माध्यम फिल्म बनानें में आसान है । प्रसाद के नाटको में प्राकृतिक चित्रण युध्द वर्णन, गीत, प्राचीन संस्कृति दर्शन आदि प्रचुर मात्रा है । यह छात्रों को वीडीओ प्रणाली एल.सी.डी. प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाने से अध्यापक को असानी होती है । तथा छात्र भी कम समय में इसे ग्रहण करते है ।

आई.सी.टी. "शैक्षिक प्रक्रिया के संगठण के लिए मानक रवैया; छात्रो के व्यक्तिगत स्वतंत्र प्रशिक्षण" आदि कें लिए लाभदायक है । सूचना और प्रौद्योगिकी के माध्यम से छात्रों मे अध्ययन के लिए रूचि निर्माण करने के लिए तथा ज्ञान और गुणवत्ता में सुधार क्षमताओं को विकसित करने के लिए आई.सी.टी. महत्वपूर्ण है ।

3.हिंदी अध्यापन मे आई.सी.टी. का प्रयोग :

Studies in Indian Place Names (UGC Care Journal)
ISSN: 2394-3114Vol-40, Special Issue-05
NAAC sponsored two days National Conference on New Accreditation Process and Quality Enhancement for rural colleges
Held on 4 and 5th February 2020
Sunderrao Solanke Mahavidyalaya, Majalgaon Dist. Beed, Maharashtra, India. 431 131

अध्यापक छात्रों को किसी कठिण भाग को सहज रूप से छात्रो को पढाना चाहते है तो उस "पाठ की योजना बनाना महत्वपूर्ण हैं अनुसंधान से पता चलता है की--- योजना कैसे बनाई गई है"[3] अगर छात्र उसे सरल रूप से समझ गया तो योजना अच्छी बनी है । इस प्रकार का छात्रों से प्रत्याभरण मिलता है ।

4. हिंदी अध्यापन और कम्प्यूटर :

आज अध्यापन हेतु कम्प्यूटर सबसे महत्वपूर्ण साधन बन गया है । कम्प्यूटर के माध्यम से ई-बुक, ई-जर्नल के माध्यम विश्व मे हो रहे अनुसंधान को छात्रो तक सहज रूप से पहुँचाया जा सकता है । एक से अधिक विद्‌यार्थी के साथ या "पूरी-कक्षा में विचार-विमर्श या व्यक्तिगत रूप में या समूह के रूप में"[4] विचारों के संप्रेषण के लिए कम्प्यूटर महत्व पूर्ण माध्यम बन गया है ।

आज हिंदी अध्यापन के लिए ई-लर्निंग का प्रयोग किया जा रहा है । जिससे छात्र घर बैठे इसका लाभ उठा सकते है । तथा जो विदेशी लोग हिंदी सिखना चाहते इसका उपयोग करते है ।

विश्व में आई.सी.टी. के माध्यम हिंदी भाषा का प्रसार-प्रचार तेजी से होने लगा है । अध्यापक छात्रोंको पढाने हेतु आई.सी.टी. प्रयोग अत्यंत सरल रूप हो रहा है । यह आज के गतिशील युग मे आई.सी.टी.महत्वपूर्ण साधन बन गई है । जिसका लाभ सभी को हो रहा हैं ।

संदर्भ :

1) डॉ.माधव सोनटक्के हिंदी के अद्‌यतन अनुप्रयोग पृ.111

2) http://festivel.1sept.Ru/articles/592048

3) nivikaspedia.in Teachers. Corner

4) http://hindi.aicte.india.org

उसकी पत्नी धनिया रोती–बिलखती हुई घर में रखे बीस आने ब्राह्मण के पवित्र हाथों पर रखती हुई कहती है– ''महाराज, घर में न गाय है न बछिया, न पैसा। यही पैसे है,यही इनका 'गोदान' है।''

भारतीय किसान कैसे पैदा हुआ, कष्ट भोगता रहा और मर गया। वह अपनी मृत्यु द्वारा भी पीड़ित होता है। प्रेमचन्द की यह कृति युगों–युगों तक किसानों की महागाथा कहती रहेगी और किसानों को समाज के उत्पादक वर्ग के रूप में पहचानकर देश की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेगी और समाज व साहित्य में किसानों की भूमिका को भी रेखांकित करेगी।

संदर्भ

१. प्रेमचन्द और उनका युग – डा. रामविलास शर्मा, पेज नं. – ९७
२. वहीं, पेज सं. ९७
३. गोदान – प्रेमचन्द, वाणी प्रकाशन, पेज नं. ५
४. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तिया, पृ.१४४– डा.नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण–१९६०
५. प्रेमचन्द और भारतीय किसान – रामबक्ष, पेज सं. १७६,
६.'गोदान', प्रेमचन्द –पेज नं. सं. ५३
७.'गोदान', प्रेमचन्द, – पृ. सं. – २४
८. वहीं, पृ. सं. – २४
९. प्रेमचंद और भारतीय किसान – डा. रामबक्ष, पेज सं. १९७
१०. प्रेमचन्द अैर उनका युग – डा. रामविलास शर्मा, पेज सं. – १७
११. प्रेमचन्द एक विवेचना – इन्द्रनाथ मदान पृ. स. – ३९
१२.गोदान, पृ. सं. १८२
१३. प्रेमचन्द एक विवेचन – इन्द्रनाथ मदान, पृ. सं. १०२
१४.गोदान, प्रेमचन्द, पृ. सं. – ६
१५.प्रेमचन्द एक अध्ययन, इन्द्रनाथ मदान– पेज सं.–९७,
१६.गोदान प्रेमचन्द, पृ. सं. – ३७१

06

विवेकी राय के उपन्यासों में कृषक जीवन

डॉ. के. बी. गंगणे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय माजलगांव जि. बीड

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महात्मा गांधी जी के देहांत की ओर चलो इस नारे के परिणाम स्वरुप भारतीय विभिन्न भाषाओं के लेखकों ने ग्रामांचलिक जन–जीवन का और उपेक्षित, अस्पर्शित, दुर्लक्षित भूखंडों में बसे हुए जन–जीवन का यथार्थ चित्रण करना शुरु कर दिया जिससे ग्राम एवं कृषक समाज का यथार्थ चित्रण व्यापक रुप में साहित्य में शरु हुआ । हिंदी साहित्य में गोदान एक ऐसी कृति है जिसमें पहली बार भारतीय किसान तथा उनका परिवेश अपनी सम्पूर्णता में चित्रांकित हुआ है । साठोत्तरी काल में कृषक विमर्श की यह धारा तेज गति से विकसित होती चली । फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त, श्रीलाल शुक्ल, रामदरश मिश्र, जगदीशचंद्र, शिवप्रसाद सिंह और विवेकी राय आदि साहित्यकारों ने पूरे सामर्थ्य के साथ भारतीय ग्रामांचल एवं कृषक समस्याओं का चित्रण किया है ।

भारतीय ग्रामांचलिक जीवन को वाणी देने का काम, इसमें चेतना भरने का काम करनेवाले साहित्यकारों में विवेकी राय का नाम अग्रणी रहा है । उन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों और निबंधो के माध्यम से पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामांचल एवं किसान समस्याओं को यथार्थ और समर्थ रुप में चित्रित किया है, इसलिए उन्हें ग्राम जीवन के समर्पित कथाकार, ग्राम जीवन के चतुर चितेरे साहित्यकार माना जाता है । विवेकी राय सिर्फ ग्रामीण मिट्टी में पैदा ही नहीं हुए है बल्कि उन्होंने अपना पूरा जीवन इसी मिट्टी में व्यतीत किया है ।

81

निरंतर ग्राम जीवन जीते रहे हैं भोगते रहे हैं । परिणाम स्वरुप उन्होंने ग्रामीण जीवन की अनुभूति को अपने साहित्य में प्रभावी ढंग से चित्रित किया है । उनका साहित्य ग्राम जीवन की संवेदना का एक विस्तृत पट लगता है.

कृषक जीवन में व्याप्त दरिद्रता का मुख्य कारण है जमींदारी एवम् जमींदारों द्वारा होता उनका शोषण विवेकी राय ने जमींदारों द्वारा कृषकों के उपर किए जानेवाले अत्याचारों एवम् उनकी शोषण-निति को सोनामाटी उपन्यास में उघाडकर रख दिया है ।

सोनामाटी में विवेकी राय ने जमींदारों की जमींदारी टूटने पर निर्माण हुई स्थिति और उसका किसान जीवन पर पडा प्रभाव स्पष्ट किया है । स्वातंत्र्योत्तर काल में जमींदारी टूट गई फिर भी जमींदारों का रोब कम नहीं हुआ । प्रस्तुत उपन्यास में गठिया के जमींदार हनुमान प्रसाद छोटी-सी गलती पर ग्राम कवि खोरा पर बरसते हैं । इस पर कवि खोरा कहता है, अब बाबू साहब जमाना बदला । अँग्रेजी राज गया । जमींदारी परथा गयी । चांदी गयी । कागज का नोट आया । नोट के साथ वोट आया । वोट माने सुराज । सब लोग बराबर हो गये ।[१] जमींदारो द्वारा किसानों पर जुल्म करना, उनसे बेगार लेना, उन्हे मारपीट करना आदि अत्याचारी कर्म किये जाते थे । जमींदारों के निरंकुश उत्पीडन के शिकार बने किसानों को जीना दूभर हो गया था । सोनामाटी उपन्यास में इसी समस्या को चित्रित किया है । महुआरी गांव के धनी और जमींदार दीनदयाल के द्वारा अपने ही रिश्तेदार मास्टर स्वरुप को खेतों में डॉड-मेंड के कारणों सें, जमीन दवोचकर, फसल काटकर सताता है, दूसरी और ससूर हनुमान प्रसाद जाली कर्ज में फॅसाकर सताता है । दीनदयाल के द्वारा सिरीभाई, खुबवा आदि सामान्य जनों की जमीन हडप ली जाती है । धनिक जमींदारों की इस हडपनिति पर प्रकाश डालते हुए रामस्वरुप कहता है, क्या मात्र परिस्थितियों का दोष है कि गांव में कोई मनुष्य, मनुष्य की तरह रहना चाहे तो उसे वैसे रहने नहीं दिया जाये गा ? क्या गांव के वर्तमान ढांचे में अव छोटे भाईयों की कोई आवाज नहीं रही है ?

नमामि ग्रामम् में विवेकी राय ने कृषि - औद्योगीकरण पर भी अपने विचार प्रस्तुत किये हैं । स्वतंन्त्रता के बाद कृषि-औद्योगिकरण विकास के कारण नई-खेती, नये बीज, खाद, यंत्र सामग्री तो आती रही, इसे जताने के लिए किसानों को ऋण की मात्रा बढानी पडी उसी के अनुपात में उत्पादन में बढोत्री नहीं हुई है, कष्ट करने की आदत छूटती जा रही है, ग्राम जीवन में व्यसनाधीनता बढती जा रही है, दांभिकता पैर जमाकर बैठी है, ऋण चुकाने के लिए-जमीन बेची जा रही है । इस गम्भीर स्थिति का वर्णन करते हुए बुढा गांव कहता है, टैक्टर और जमीन बिक जाती है, संगी-साथी कपूर हो जाते हैं । वैभव भोर का तारा हो जाता है । लक्ष्मी अपना डेरा उठा लती है । आज के बाद का काल परम अनिश्चित एवं अंधकारमय है ।[३] नमामि ग्रामम् में ग्रामांचलिक जन-जीवन में किसानों का भूखा रहाना, उसके पास ईंधन का अभाव होना, रहने के लिए घर न होना, अतिवृष्टि में कच्चे घरों का ढह जाना आदि के चित्रण के माध्यम से किसानों की अभावग्रस्तता पर चिन्तन किया है । महाजन का ऋण, पैदावार के अनुपात में बढता हुआ परिवार, उसका खर्च महंगाई एक और तो दूसरी और किसानों के अनाज को लुटाया जा रहा है, घर में लडकियों की शादी की समस्या आदि से किसानों का मन चिंताक्रान्त रहता है, दिन भर परिश्रम करना, शाम को मुंह लटकाये घर आना, चिन्ता से राहत मिलने के लिए चिलम सुलगाना आदि अभावग्रस्तजन्य पीडा से ग्रस्त किसानों का चित्रण नमामि ग्रामम् में किया है ।

बबूल उपन्यास में बाढ के कारण घुरबिन का घर ढह जाता है, खेत डूब जाते हैं, पहले ही गरीबी से पिडित घुरबिन ओर असहाय बन जाता है । बाढ के कारण उसका दारिद्रय और बढ जाता है । बाढ के कारण किसानों की सारी फसल बह जाती है । इस आपत्ति से पिडित घुरबिन तीज-त्योहार, कृष्ण जन्मोत्सव आदि के प्रति कोई दिलचस्पी नहीं रखता । इस संदर्भ में डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ ने कहा है-बबूल में बहुत तीखेपन के साथ अंकित किया गया है कि आजादी का सुफल देश के सर्वहारा को नहीं मिला[४]

उपन्यास में विवेकी राय ने अतिवृष्टि को

चपेट से ग्रामवासियों की हुई हानि पर चिंतन किया है । अतिवृष्टि में महेसवा तथा अन्य किसानों की गेहूँ, चना, अरहर की खेती की हानि पर चिंता करते हुए किसान कहते है, पानी नहीं आग, जल नहीं जहर, बादल नहीं विपत्ति और बूंदें नहीं बरबादी । कौन छाता तानकर आसमान को रोके? उमंग पर पानी, आशाओं पर पानी और सारी अभिलाशाओं पर, यह घुटने भर पानी, डूब मरने पर पानी ![५] अतिवृष्टि की इस स्थिती पर महेसवा दैववादी बनकर भगवान को कोसता है, किसानों की खुशी शायद भगवान को देखी नहीं जाती है, इस अतिवृष्टि ने किसानों के सपने भंग किये थे, उनकी आशाओं पर पानी फिराया था, किसानों के घर परिवार बह गए, कच्चे घर ढह गए थे, अतिवृष्टि के दिनों मजदूरी न मिलने के कारण मजदूर किसानों को भूखा रहना पडता है ।

किसानों के सामने जैसे अतिवृष्टि की पीडा उभरती है, वैसे अनावृष्टि से भी काफी नुकसान होता है, समय पर वर्षा नहीं होती तो बोआई समय पर नहीं होती अकाल चिन्ह स्पष्ट होते है । खेत में फसल नहीं, माल—मवेशियों को चारा नहीं, पीने के लिए पानी नहीं मिलता, घर में खाने के लिए कुछ नहीं रहता, मजदूरी के लिए काम नहीं मिलता यह अकाल की भीषणता आग उगलती है । सामान्य जन बैचेन हो जाते हैं । इस स्थिति को बबूल के मास्टर प्रवुध्दशील ने स्पष्ट करते हुए कहते है, तिस पर भी यह अकाल ! भयंकर आवर्षण ! गांव के अच्छे — अच्छे लोगों के चेहरे पर हवाइयाँ उड रहीं हैं । महीनों से पानी की एक बूंद धरती पर नहीं गिरी, फसल सूख रही है ।[६] अकाल में सरकारी अधिकारी केवल मदद करने का आश्वासन ही देते है । अकाल की स्थिति में खेती से उत्पन्न नहीं मिलता, जिससे किसानों का जीवन बेहाल होता है । बबूल उपन्यास में महेसवा जैसा गरीव हरिजन की स्थिति और भी कठीन हो जाती है।

भारतीय कृषि व्यवस्था अधिकतर प्रकृति पर निर्भर रही है । इसलिए भारतीय खेती एक चौसर के खेल के समान मानी जाती है । बाढ, सुखा, अनावृष्टि, अतिवृष्टी आदि प्रकोपों से ग्रामिण खेती व्यवस्था खतरे में रही है । विवेकी राय ने अपने उपन्यासों में इसका विस्तार से चित्रण किया है ।

निष्कर्ष : कहा जा सकता है कि उपन्यास कार विवेकी राय मूलतरू ग्रामांचल जन— जीवन के कुशल लेखक है । ग्रामीण परिवेश का चित्रण करते समय उन्होंने किसान जीवन की अनेक समस्याओं का वर्णन किया है । किसान का जीवन प्रारंभ से अंत तक इस कृषी प्रधान देश में किस तरह से अभावग्रस्त है इसका दर्शन उन के उपन्यासों में होते है ।

संदर्भ—

१. विवेकी राय — सोनामाटी, पृ.७३
२. विवेकी राय — सोनामाटी, पृ.२६५—२६६
३. विवेकी राय— नमामि ग्रामम्, पृ.४०
४. सं.डॉ.रामदरश मिश्र— हिंदी उपन्यास के सौ वर्ष, पृ.३८६
५. विवेकी राय— बबूल, पृ.१३०
६. विवेकी राय— बबूल, पृ.४१

❑❑❑

पत्रकारिता के माध्यम से रोजगार की संभावनाएं

डॉ काकासाहेब गंगने .
शोध निर्देशकहिन्दी विभागाध्यक्ष
सुंदरराव सोळंके महाविदयालय, माजलगाव -बीड

रियनल रघुनाथराठोड
शोधछात्र
तुलजाभवानी महाविदयालय ,तुलजापुर

पत्रकारिता वास्तव में खबर संदेश की कला है। सामाजिक सरोकारों तथा सार्वजनिक हित से जुड़कर ही पत्रकारिता सार्थक बनती है। प्रजातंत्र में पत्रकारिता का अपना विशेष महत्व है। इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। समय और व्यवस्था के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध जाग्रत करने का काम पत्रकारिता करती है। मानवी जीवन की विविधता , राजमार्गों के संदर्भ एंव घटित होनेवाली नयी-नयी घटनाएं और थिति- गति को बड़ी तत्परता से दुनिया के सामने प्रस्तुत कराने का काम पत्रकारिता करती है। पत्रकारिता के इतिहास पर नजर डाले तो स्वतंत्रता के पूर्व पत्रकारिता का मुख्य उदेश स्वतंत्रता प्राप्तिका लक्ष्य था।स्वतंत्रता के लिए चले आंदोलन और स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता ने अहंम और सार्थक भूमिका निभाई। उस दौर में पत्रकारिता ने पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने के साथ पुरे समाज के साथ को स्वाधीनता की प्राप्ति के लक्ष्य से जोड़े रखा । श्रम अर्थशास्त्रकी दृष्टि से पत्रकारिता संगठित -असंगठित , कुशल- अकुशल , अनुभवी - अनुभवहीन् नियमित -अनियमित श्रम जीवियों एंव वेतन भोगियों की मिश्रित अर्थयवस्था का क्षेवा क्षेत्र है । इस श्रखला के एक सिरे पर स्वताधिकारी होता है दूसरे सिरे पर हॉकर। इसश्रखला में जो भी मानव संसाधन श्रम करता है, नियमित अथवा अनियमित संगठित अथवा असंगठित रूप में अपने अनुंबधके अनुसार वेतन पाता है । रोजगार की दृष्टि से यह एक आकर्षक क्षेत्र है, सूचना प्रोऔद्योगिक इसकी सुषुम्णा नाडी है, और इस कारण इस सेवा क्षेत्र में भी नौकरियों की दृष्टि पत्रकारिता का विकास एंव विस्तार इतना हुआ है की इसमेंरेडियों, दूरदर्शन , इंटरनेट फ़िल्म आदि सभी माध्यम के साधन अंतर्भूत हो गए है जिससे प्रिंट मिडिया के साथ इलेक्ट्रॉनिक मिडिया का प्रचलन बढ़ गया है। वर्तमान सुचना और प्रौद्योगिक के युग में जीवन या पन करनेवाले सभी के लिए पत्रकारिता ज्ञान् मनोरंजन एंवसंचार का एक सशक्त माध्यम बन गया है। पत्रकारिता न्यूज कैफत है जो की समाचारों तक ही सिमित नहीं है ।साहित्यिक परिवर्तन् मनोरंजन, तफ्तीश, पारिस्थितीतिकी एव पर्यावरण के अध्यतन एवं उन्नत ज्ञान का पर्याय है।

आजकी पत्रकारिता को बहुआयामी और अनंत बना दिया है। आज कोई भी जानकारी पालक झपकते उपलब्ध की और कराई जा सकती है। मीडिया आज काफी सशक्त, स्वतंत्र और प्रभावकारी हो गया है। पत्रकारिता की पोहोंच और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का व्यापक इस्तेमाल आमतौर पर सामाजिक सरोकारों और भलाई से ही जुड़ा है किन्तु कभी कभार इसका दुरुपयोग भी होने लगा है। इसके लिए कही न कही शिक्षण संस्थाओं में हिंदी,के साथ जुड़े हम सब लोगों को अपनी भूमिका पर पुनर्विचार करना चाहिए। हमे अपनी उन मान्यताओं व मानसिकता को तत्काल त्याग करनेकी हिम्मत जुटानी चाहिए जिनके अनुसार हिंदी काकाफी अहित शुद्धिकरण के नाम पर किया जा चूका है। यह मान्यताकी आज पत्रकारिता से हिंदी का अहित हो रहा है उसे बिगाड़ा जा रहा है; भलेही किसीके रूप में ठीक लगती हो लेकिन इसके चलते उन लाखों करोड़ों रोजगार के अवसरों की अनदेखी नहीं की जा सकती जो पत्रकारिता के क्षेत्र ने हिंदी के जानकारी के लिए खोले है । भूतपूर्व महामहिम राष्ट्रपति डॉ शंकर दयाल शर्मा के शब्दों में "पत्रकारिता एक पेशा नहीं है बल्कि यह तो जनता की सेवा वह माध्यम है । पत्रकारों को सिर्फ घटनाओं का विवरण ही पेशनहीं करना चाहिए, पत्रकारोंपर लोक तांत्रिक परम्पराओं की रक्षा करने शांति तथा भाई-चारा बढानेकी जिम्मेदारी भी आती है।"१ साथ ही भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने कहा है "पत्रकारिता जनसेवा है। इसका प्रमुख उदेश्य खबरों को जानकारी देकर उन्हें उचित तरीके से जाँच और निर्णय लेने में सहयोग करना है।" २माधवराव सप्रे से लेकर हुकमचंद तक पत्रकारिता ऐसे पुरोधा मनीषियों के लिए व्यहार की वास्तु न होकर आतमा का ही प्रक्षेपण बन गयी थी।" ३ पत्रकारिता की महतता को पाश्चात्य विद्वान् एडिसन कहते है "मेरी पत्रकार होनेकी चिर इच्छा पूर्ण होने से रह ही गयी। पत्रकार कला से अधिक मनोरंजक अधिक विमोहक, अधिक रसमयी व अधिक सर्वतोमुखी कोई भी दूसरी बात मुझे दिखाई नहीं देती।

पत्रकारिता का उदेश्य आम आदमी तक सूचना पहुचाना है साथही सत्य को प्रस्तुत करना है। जहॉ व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए आज कुछ लोग बड़े चोर, जालसाज, धूर्त, गद्दार लोग जेलों से चुनाव लड़ रहे है। ऐसी विषम परिस्थितियों में पत्रकारिता का उदेश्य यह भी है, की वह जान साधारण के सामने सत्य को उद्घाटित करके साधारण जनता का मार्गदर्शन करें। पत्रकारिता का, मुख्य कार्य समाज को शिक्षित करना है। पत्रकार ज्ञान का गुरु होता है । इसलिए जान साधारण को सूचित करना पत्रकारिता का उदेश्य है। अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए मनोरंजन करना जहां मानसिक भूख शांत होती है। देश विदेश की घटनाओं का विवरण एकत्रित कर उसे आम जनता तक प्रचार-प्रसार करने की अहम् भूमिका पत्रकारिता की है । प्राचीन काल से लेकरआधुनिक काल तक पत्रकारिता

को हमेशा समाज में अच्छा स्थान मिलता रहा है। पृथ्वी जगत में ऐसा कोई समाज नहीं रहा जिसमे पत्रकारिता का अस्तित्व किसी रूप में उपस्थित न हो। पौराणिक युग में भी महर्षि नारद एक कुशल पत्रकार की भाँति देवलोक तथा मृत्युलोक के बीच संप्रेषण का कार्य करते थे। पत्रकारिता को जीवन का साधन का साधन बनाने के उपरान्त कुछ अन्य क्षेत्र भी है जो पत्रकारिता एवं पत्रकार दोनों के लिए खतरनाक है। धार्मिक, राजनीतिक, अतिवादी, शक्तियां, सामाजिक रूढ़िवादी विचारधाराएं वे तत्व है जो अपनी पिछड़ी मानसिकता के कारन अपने विचार, झण्डे परम्परा के नीचे पंचायत जोड़कर पत्रकारिता को कटघरे में खड़ा करने का प्रयास करते है। अनेक लोगों को अपने प्राण देने पडे। जीवन की त्रासदी इसका प्रमाण है। पत्रकारिता के हर दरवाजे पर मौत खड़ी है। जनक पत्रकार तलवार की धार पर दौड लगता है। किन्तु संभावनाओं के अनेक क्षितिजरूपी तलवार की धार पर दौड लगाने के बाद खुल जाते है। आज का युग सूचना क्रांति का युग है। पत्रकारिता समाज को शिक्षित जागरूक, सचेत कराती है। साथ में जनता का मनोरंजन भी कराती है। इसी कारन वह छोटे-बड़े बुजुर्ग के दिलों पर राज करती है।

पत्रकारिता का वेद है, जिसके द्वारा हम ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी तथ्यों को जानकर अपनी बंद मस्तिष्क को खोलते है। पत्रकारिता एक चिकित्सक की भाती यह भी बतलाती है की भविष्य में कौन-कौन सी सावधानी बरती जाये जिससे यह रोग आक्रमण न करने पाए। पत्रकारिता ही समाज के उत्थान-पतन, सत्य-असत्य विनाश की स्थितियों को यथावत हम तक पहुंचती है। समाज में फैली बुराईयों तथा ऊंच-नीच, जाति-पाती. भेद-भाव, अंधविश्वास के विरूद्ध संघर्ष छोड़कर समाज को इन बुराईयों से मुक्त कराती है। विख्यात पत्रकार जोसेफ पुलित्जर पत्रकारिता को एक महान जान-सेवा का कार्य मानते थे। उनका मानना था की समाचार पत्र को आम जनता के नजदीक होना चाहिए बड़े लोगों के साथ नहीं। राष्ट्र की एकता, अखण्डता बनाने में राष्ट्रीय चरित्र का सृजन करने में अनुशासन व्यवस्था, भाईचारा की भावनाओं का संचार करने में पत्रकारिता का जवाब नहीं। सभी लोगों की अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए पत्रकारिता माध्यम है। जैसे किसी को नौकरी की आवश्यकता हो तो वह व्यक्ति 'रोजगार' कॉलम द्वारा नौकरी पाने को कोशिश करता है। किसी को फील्म देखना हो तो वह सर्वप्रथम समाचार पत्र देखता है की शहर में किस थियेटर में कौन सी फिल्म लगी है। दी इण्डियन एण्ड ईस्टर्न न्यूज़ पेपर सोसायटी ने यह स्पष्ट किया है की- "समाचार पत्र और पत्रिकाएँ किसी भी देश के निति-निर्धारण एवं उसे मूर्तरूप देनेवाला एक शक्तिशाली माध्यम है। प्रेस सूचना देने और शिक्षा प्रसारण के साथसाथ शासन और जनता के बीच एक सार्थ सम्पर्क विकसित करता है।" पत्रकारिता शासन और जनता के बीच मध्यस्तता का काम करती है। आनेवाले समय में पत्रकारिता क्षेत्र के लिए अच्छी वढ़ोत्तरी होने की सम्भावनाये है जिस से रोजगार के अधिक अवसर पैदा होना लाजमी है। अगले पाँच सलून की बात करे तो २००९-२०१३ के बीच भारतीय मिडिया उद्योग फायदे में बना रहेगा और ऐसा अनुमान है की आनेवाले साल में भी वह दहाई की संख्या मेंसूचना सम्प्रेषण हेतु इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का अविष्कार हुआ है। रेडिओ टी व्ही, वीडियो, केबल, मल्टीमीडिया, इंटरनेट, वेब, पत्रकारिता की अपनी एक पहचान है। इस क्षेत्र में रोजगार की संभावना देखने को मिलती है। रेडिओ आकाशवाणी समाचार तथा मनोरंजन का सशक्त माध्यम है। आज भारत में हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में लगभग सौ से अधिक रेडिओ केंद्र है। इस क्षेत्र में न्यूज़ रीडर, रिपोर्टर, न्यूज़ राइटर, सब एडिटर. असि. न्यूज़ एडिटर, अनाउंसर, प्रोग्राम एक्सेक्यूटर आदि पदों पर रोजगार उपलब्ध हो सकता है। ज्ञान-विज्ञान एवं मनोरंजन के क्षेत्र में प्रसारित होने वाले कार्यक्रम के लिए लेखक, विशेषज्ञ, सूत्रधार, एवं विश्लेषक के रूप मे हिंदी को लेकर रोजगार की अनंत सम्भावनाये है।हिंदी भाषा में प्रसारित होनेवाले आकाशवाणी के विभिन्न कार्यक्रमों की लोकप्रियता देखते हुए इसमें अधिकता से रोजगार मिल सकता है। विश्व स्तर पर भी प्रिंट मीडिया के लिए परिदृश्य सकारात्मक माना जा रहा है। अखबारों के लिए सबसे बड़ा बाजार इंडिया में है जहा पर रोज10 करोड़ 70 लाख अकबार बिकते है। चीन और जापान के साथ इंडिया को मिला ले तो विश्व का समाचार बाजार ६० प्रतिशत हिस्सा इन तीन देशों में है। पत्रकारिता का व्यवसायिक प्रशिक्षण पाए बिना ही लोग इस क्षेत्र में हाथ पांव मारना आरंभ करते हैं। शासकीय अर्ध शासकीय क्षेत्र की सेवाओं में कार्यरत लोग भीअपनी मर्जी से पार्ट टाइम जॉब के रूप में आ जाते हैं। बेरोजगार से जूझता हुआ जो वर्ग इस क्षेत्र में आता है उसके पास व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं पत्रकारिता दर्शन की अनभिज्ञता दोनों ही होती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में समस्या मादक परिपेक्ष में रोजगार की अनंत संभावनाएं है। इसमें ई-जर्नल्स, ई-बुक ई-मैगजीन ई-समाचार पत्र आदि में हिंदी और कंप्यूटर के आवश्यक ज्ञान तथा अनुभव द्वारा रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। हिंदी में ब्लॉग चलाकर काफी पैसा कमाया जा रहा है। विभिन्न चैनलों पर प्रसारित होने वाले हिंदी कार्यक्रमों के माध्यम से रोजगार उपलब्ध है। आज एन. डी. टी. व्ही., २४ न्यूज़ जी न्यूज़ स्टार न्यूज़, डिस्कवरी, नॅट जिओ चैनलों पर अभिहित होनेवाले समाचार, ज्ञान, मनोरंजन की विविध कार्यक्रमों के लिए वृत निवेदक संवाददाता, प्रस्तुतकर्ता एवं अनुवादक आदि पदों से रोजगार की संभावनाएं है। मैटर की कम्पोजिंग प्रूफ रीडिंग छपाई, पैकिंग, तथा वितरण व्यवस्था में रोजगार की उपलब्धता है। आज पत्रकारिता नयी भंगिमा के साथ रोजगार के अनेक अवसरों के दरवाजे खोल रहे

है आवश्यकता के साथ इस क्षेत्र में व्यावसायिक कुशलता को उत्पादकता से जोड़कर अधिकतम अभिलाभ प्राप्त किया जा सक पत्रकारिता के विविध रूपों में अपनी रुचि के अनुसार स्वतंत्र रूप से कार्य करने हेतु रोजगार सम्भावनाएं दिखाई देती है।

क) पत्रकारिता के पारम्परिक क्षेत्र-

१. साहित्यिक पत्रकारिता
२. वैज्ञानिक पत्रकारिता
३. कृषि पत्रकारिता
४. ज्योतिष पत्रकारिता
५. राजनैतिक पत्रकारिता
६. अपराध पत्रकारिता
७. सेवा योजन पत्रकारिता
८. व्यापार वाणिज्य एवं व्यवसाय पत्रकारिता
९. मौसम, पर्यावरण एवं सामाजिक विषयक पत्रकारिता
१०. शिक्षा एवं रोजगार-नियोजन विषयक पत्रकारिता
११. धार्मिक पत्रकारिता

ख) व्यावसायिक पत्रकारिता क्षेत्र-

१. विज्ञान पत्रकारिता
२. खेल पत्रकारिता
३. फिल्मी पत्रकारिता
४. खोजी पत्रकारिता

ग) नयी पत्रकारिता

१. मनोरंजन पत्रकारिता
२. कॉर्पोरेट पत्रकारिता
३. आक्रामक पत्रकारिता
४. प्रश्न पहेली सु-डोकु पत्रकारिता
५. गोन्ज़ो पत्रकारिता
६. वृत्तांत/कमेंट्री पत्रकारिता
७. कन्वर्जेन्स पत्रकारिता
८. आतंरिक गृह सज्जा पत्रकारिता
९) सेलिब्रिटी / व्यक्ति पत्रकारिता
१०) जनमत संग्रह पत्रकारिता
११) वि पत्रकारिता

घ) प्रकाशन प्रबन्धन क्षेत्र

१) क्रय -प्रबन्धन
२) प्रबन्धन
३) वितीय संसाधन प्रबन्धन
४) विपणन / वितरण प्रबन्धन
५) धार्मिक प्रबन्धन
६) सम्पादन प्रबन्धन

च) लेखन / रिपोर्टिंग क्षेत्र

१) विधि लेखन
२)सामाजिक लेखन
३) समाचार लेखन
४) फिचर लेखन
५) कलात्मक लेखन
६) सम्पादकीय लेखन
७) समीक्षा लेखन
८) साहित्यिक लेखन
९) फ़्रीलांस लेखन

छ) सम्पादन का क्षेत्र

१) धर्म एंव ज्योतिष सम्पादन
२) अपराध / स्थानीय समाचार सम्पादन
३) खेल सम्पादन
४) फ़िल्म / दूरदर्शन सम्पादन
५) विज्ञान सम्पादन
६) विज्ञापन सम्पादन
७) बाल / शिशु विषयक सम्पादन
८) समाचार सम्पादन
९) राजनैतिक सम्पादन
१०) स्वास्थ शिक्षा सम्पादन
११) साहित्य सम्पादन
१२) समाचार / सम्बंध सम्पादन
१३) अर्थ व्यापर एंव कापरित मामलों का सम्पादन

ज) कंप्यूटर द्वारा टंकण पृष्ठ संयोजन मुद्रण
झ) लेखाकार
ञ) फोटोग्राफर
ट) विधि सलाहकार
ठ)कुशल तकनिकी क्षेत्र
ड)आर्ट /कार्टूनिस
ढ)लिपिक
ण) विपणन क्षेत्र
त) अकुशल / असंगठित श्रमिक वर्ग
थ) चार्टीरत लेखाकार आदि।

निष्कर्षत :-

यह कहा जा सकता है की पत्रकारिता के विभिन्य माध्यम और विशाल पाठक दर्शन वर्ग के कारण हिन्दी पत्रकारिता और रोजगार प्राप्ति का सशक्त साधन बन गयी है। फ्रान्स अमेरिका, चीन में अभिरुचि प्रमाण पत्रकारिता की जो नींव पड़ी थी वह आज अपने व्यावसायिक एंव औद्योगिक संदर्भो में बहुत विकसित हुई है। इस प्रकार हम देखते है की आज संचार क्रांति के युग में अंतरिक्ष पत्रकारिता का महत्व दिन -प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। नवीन साधनों ने मानव- जीवन को बहु- आयामी बना दिया है। व्यक्ति अपनी रूचि प्रवृत्ति तथा प्रतिभा के आधार अपने लिए विशिष्ट क्षेत्र का चुनाव करता है यही बात पत्रकारिता के क्षेत्र में भी लागु होती है। क्योंकि वर्तमान युग विशिष्टीकरण का युग है। हिन्दी के छात्रों को भाषा पर अपने अधिकार का लाभ पत्रकारिता के क्षेत्र में उठाना चाहिए। इसके जहाँ उनका अपना भविष्य बनेगा वही हिन्दी का भी भला होगा। पत्रकारिता जगत आज रोजगार की दृश्य से लुचित सिध्द होने की स्थिति में है। आज पत्रकारिता ऐच्छिक विषय नहीं रहा है वह व्यावसायिकऔद्योगिक चिन्तन का माध्यम बन गया है।कार्पोरेट एवऔद्योगिक क्षेत्र के बड़े घराने के लोग भी आज इस व्यवसाय से जुड़े हैएवसेवायोजन के अवसर सृजित कर रहें और एक सकारात्मक पहल है जो देश काल सापेक्ष भी है।

संदर्भ ग्रंथ

- इलेक्टॉनिक मिडियाएवं सूचना औद्योगिकडॉ– गुप्ता सी .यु ., पृष्ठ०२-
- इलेक्टॉनिक मिडियाएवं सूचना औद्योगिकडॉ– गुप्ता सी .यु ., पृष्ठ०३-
- कंप्युटरमिडिया प्रो भगवानदेव पाण्डेय:, पृष्ठ५०-
- जन संचार माध्यमएवं हिन्दी पत्रकारिताडॉ – अर्जुन तिवारी ., जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद .
- डॉ राजकुमार रानी .- पत्रकारिता विविध विधाएं, जयभारती प्रकाशन , इलाहाबाद
- डॉ धीरेंद्रनाथ सिंह-हिन्दी पत्रकारिता
- बच्चन सिंह -हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप
- वेबसाइट /इन्टरनेट

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

२८. हिंदी में रोजगार के विविध क्षेत्र

डॉ. के. वी. गंगणे
हिंदी विभागाध्यक्ष, सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव, जि. बीड.

भाषा मनुष्य के भावों तथा विचारों के संप्रेषण का महत्वपूर्ण साधन है। भाषा जब संप्रेषित होती है तब ही वह सार्थक होती है। भाषा मनुष्य के विचारों तथा भावों को दूसरों तक पहुचाने का सबसे संशक्त माध्यम है। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती है जिसमें हिंदी भारत की, राष्ट्रभाषा है। हिंदी आज बहुसंख्यक वर्ग या विशाल जन समुदाय की भाषा है। कोई भी भाषा जब विविध विषयों और क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है तो विषय या क्षेत्र की मॉग के अनुरूप उस भाषा में विकास या परिवर्तन आता है। उसमे नयापन और विशिष्टता आती है। उसका रूप बदलता है। हिंदी भाषा के साथ भी ऐसा ही घटित हुआ यह भाषा समय और युग की मॉग के अनुरूप अपना विकास करती गई है। राष्ट्रभाषा और राजभाषा घोषित होने के बाद उस भाषा का दायित्व पहले से कहीं ज्यादा बढ गया है। इसलिए प्रयोग के विषय, क्षेत्र, संदर्भ इत्यादी, के विकास के साथ–साथ इसके विविध रूप उभरकर सामने आए है। यथा बोलचाल की भाषा, रचनात्मक भाषा, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संचार भाषा, कार्यालयी भाषा, वित्त एवं वाणिज्य की भाषा, मशीनी भाषा आदि। परिणाम स्वरूप इन सभी विविध क्षेत्रो में हिंदी का प्रयोग होने से हिंदी भाषा में रोजगार के विविध क्षेत्र खुले हो गये है। उस क्षेत्र का ज्ञान आर्जित करके रोजी–रोटी या करियर निर्माण कर सकते हैं।

देश में सर्वाधिक रूप में बोली एवं समझी जाने वाली भाषा होने के कारण भारत के संविधान में अनुच्छेद 343 (1) के अंतर्गत देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार किया गया साथ ही, अनुच्छेद 351 के अंतर्गत हिंदी भाषा का प्रचार, प्रसार एवं विकास का दायित्व केंद्रिय सरकार को सौपा–गया। यही का प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है जिसने हिंदी के लिए रोजगार के दालन खोल दिए। हिंदी के प्रयोग की संभावना काफी बढ गई। अनेक क्षेत्रों में उसका प्रयोग होने लगा उसी के साथ 'प्रयोजन मूलक हिंदी' के विविध रूप विकसित होने लगे। केंद्र सरकार, उसके मंत्रालय, और विभाग ही नहीं केंद्र सरकार के नियंत्रण में कार्यरत सभी निगम और उपक्रमों के कामकाज हिंदी में ही होने लगे जिसके लिए हिंदी अधिकारी, अनुवादक, हिंदी सहायक, टंकक, आशुलिपिक आदि के लाखों पदों का सृजन हुआ और हिंदी को रोजगार की भाषा के रूप में देखा जाने लगा।

हिंदी न केवल भारत की 90 प्रतिशत जनता द्वारा बोली समझी जानेवाली लोकप्रिय भाषा है। अपितु विश्व में तीसरे स्थान पर बोली जाती है। जिसके कारण वैश्विक स्तर पर भी हिंदी का महत्त्व बढ गया है। भारत में 100 करोड से अधिक अर्थात विश्व की दूसरी सबसे बडी आबादी भी है। आवागमन की बढती सुविधाएं, संचार–क्रांति, और वैश्वीकरण के कारण दुनिया में एक नई अर्थव्यवस्था। आकार लेने लगी है। विकसित राष्ट्र अपने 100 करोड से ज्यादा को विपणन, विक्रय के लिए भारत को एक विशाल 'मार्केट' के रूप में देखने लगे है। "100 करोड से ज्यादा को विपणन, विक्रय के लिए भारत को

लगभग 70 करोड़ लोग जिस भाषा को समझते बोल सकते हैं, उस भाषा को वह कैसे नजर अंदाज करेगा ? [illegible] उसको दो प्रतिशत अंग्रेजी जानेवाले तथाकथित उँचे लोगों से नही, बल्कि 70 प्रतिषत हिंदी बोलनेवाले आम लोगों [illegible] आबादी तक अपना उत्पाद [illegible] भी करना है । "[illegible] साथ ही वे यह भी जान गए है कि भारत की करोड़ो की आबादी तक अपने उत्पाद [illegible] जानकारी पहुँचाने के लिए संपर्क भाषा के रूप में हिंदी से वेहत्तर कोई भाषा नहीं हो सकती । परिणाम स्वरू[illegible] विश्व के अनेक देशों में हिंदी के प्रोत्साहन के लिए केंद्र खुल गए । " संचार माध्यमों की पीठ पर सवार हो[illegible] अपनी हिंदी भी अब ग्लोबल हो गई है। बदलते रूप की हिंदी भारत की ही नहीं, दुनियाभर के सभी जनों की [illegible] तकनीक और बाजार की मॉंग ने इसका स्वरूप बदल दिया है।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि आज पूरे विशव ने हिं[illegible] को एक 'आवश्यक' भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है । परिणाम स्वरूप केवल भारत में ही नही पूरे विश्व [illegible] हिंदी में रोजगार के अवसर खूल गए है।

आज कल हिंदी का एक नया स्वरूप उभरकर सामने आ रहा है। जिसे 'प्रयोजनमूलक हिंदी के नाम [illegible] जाना-पहचाना जा रहा है। सूचना प्रांद्योगिकी के इस युग में हिंदी ने भी आखिरकार करवट वदलनी शुरु कर [illegible] है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों ने हिंदी के विभिन्न पाठ्यक्रमों में अनुवाद, पत्रकरिता,मीडिया आदि रोजगारपर[illegible] विषयों को अधिक-से-अधिक स्थान देना शुरु कर दिया है हिंदी को प्रयोजनमूलक स्वरूप प्रदान करना और इ[illegible] रोजगार से जोड़ना यह आज के युग की सबसे वडी जरूरत है। इस सन्दर्भ में डॉ. पूरनचन्द टण्डन का वि[illegible] अत्यंत महत्वपूर्ण है । "आज आवश्यकता है कि हम संसार की 'रेस' में आने के लिए राष्ट्रभाषा की क्षमता [illegible] उसकी शक्ति को, उसके वहुमुखी आयामों को पहचानें और नई प्रयोगमूलक व्यवहारमूलक, उद्योगमू[illegible] व्यापारमूलक, व्यवसायमूलक, प्रशासनमूलक, तथा रोजगारमूलक दृष्टि को विकसित करें।"[3]

भाषाओं की प्रयोजनीयता के संदर्भ में अनुवाद का आज अत्यधिक महत्त्व है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र [illegible] है जिसमें अनुवाद की आवश्यकता महसूस नहीं की जा रही है। आज का विद्यार्थी साहित्य के ज्ञान के अति[illegible] अनुवाद विषय में किसी पाठ्यक्रम को करने के बाद रोजगार प्राप्त कर सकता है। जैसे वरिष्ठ अनुवादक, [illegible] अधिकारी, सम्पादक, सह-सम्पादक, तत्काल, भाषांतरकार आशु-अनुवादक, निदेशक हिंदी-कार्यान्वयन प्र[illegible] [illegible]-अनुवादक, समाचार-वाचक, संवाददाता, उदघोषक, स्लोगन अनुवादक, धारावाहिक-अनुवादक, पर्यट[illegible] अनुवादक, [illegible]-अनुवादक, डॉबिंग स्क्रिप्ट अनुवादक, रेडिओ तथा दुरदर्शन के लिए अनुवाद, फीचर-अनु[illegible] [illegible] साहित्य के क्षेत्र में अनुवादक तथा कोष-विज्ञान में भी अपनी महत्वपूर्ण जगह बना सकता है [illegible] सन्दर्भ में प्रख्यात भाषाविद डॉ. पूरनचन्द टंडन कहते है कि - "किसी अन्य नोकरी में रहकर भी हम अनु[illegible] [illegible] माध्यम बना सकते है। पैसा भी मिलता है और नाम भी। पुरस्कार भी मिलते है। और [illegible] उपलब्ध है। आज का विद्यार्थी अनुवाद पाठ्यक्रम करने के बाद अच्छा रोजगा[illegible] [illegible] पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित की जाती है। साथ ही भारतीय एव विदेशी [illegible] [illegible] हिंदी में प्रकाशित किए जाते है। नेशनल बुक ट्रस्ट, साहित्य अकादमी भारतीय [illegible] [illegible] के अनुवाद हिंदी में करती हैं। उन्हें कुशल अनुवादकों की सदैव तला[illegible]

[illegible] माध्यम, चाहे वह मुद्रित हो, श्रव्य हो या दृश्य–श्रव्य, आज अपने–आप में एक व्यवसाय बन गया है [illegible] व्यापार का एक प्रमुख माध्यम भी। विज्ञापन' वैश्वीकरण के खुले बाजार का एक सशक्त माध्यम है। [illegible] विज्ञापनों पर भी अंग्रेजी छाई हुई थी, लेकिन आज हिंदी उसमें अग्रस्थान पर है। विज्ञापन जगत के एक [illegible] नवीन माथुर ने कहा भी है– " भविष्य में तमाम विज्ञापन एजेंसियों को इस बात को गहरे तौर पर [illegible] पड़ेगा कि लगातार महंगे होते जा रहे विज्ञापनों के दौर में क्लायंट को पुरा प्रतिफल मिलना चाहिए। उसके [illegible] हिंदी के बिना काम नहीं चल सकता। "[5] आज विज्ञापन जगत में हिंदी कॉपीराइटरों की मांग बाजार में तेजी [illegible] रही है। भारत में सर्वाधिक समाचारपत्र पत्रिकाएं हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं। ऐसे अखबारों के लिए काम [illegible] वाले रिपोर्टरों,अनुवादकों, भाषा–सहायको,डाटा ऑपरेटर्स, कपोजियर्स, उपसंपादकों के पदों के विज्ञापन [illegible] देखे जा सकते है। उम्मीदवारों को जरूरत होती है तो, 'खुदी को बुलंद' करने की। आज भारत में सर्वाधिक [illegible] हिंदी के है। विदेशी चैनल तक हिंदी में अपना प्रसारण कर रहे हैं। हिंदी सिनेमा भारत ही नहीं [illegible] में [illegible] है। विश्व में हॉलीऊड के पश्चात बॉलीऊड दूसरे स्थान पर है। सिनेमा निर्माण के अनेक गतिविधियों में [illegible] कौशल्य प्राप्त लोगों की आवश्यकता है।

आज संपूर्ण भारत में पर्यटन एक अच्छे उदयोग का रूप ले रहा है। हिंदीतर भाषी प्रदेशों से आने वाले [illegible] उनकी अपनी भाषा में न सही पर हिंदी में जानकारी दे पाने वाले सक्षम 'गाइड' की सेवाएं सहज स्वीकार [illegible] है। विदेशों में भी पर्यटन के क्षेत्र में हिंदी लोकप्रिय हो रही है। दुभाषिये के रूप में भी आज रोजगार की [illegible] संभावनाएँ उपलब्ध है।

[illegible] कहा जा सकता है कि हिंदी में रोजगार कम नहीं है। हिंदी के [illegible] देश–विदेश में [illegible] [illegible] [illegible] है। आवश्यकता है उस क्षेत्र का कौशल्य अर्जित करने की [illegible] [illegible] करेगा, उतना पाएगा। [illegible] हिंदी [illegible] [illegible] दिन–दिन इसके बढ़ रहे महत्व से यह बात निःसंकोच कहा जा सकता है कि [illegible]

[illegible]

1. हिंदी के अद्यतन अनुप्रयोग – डॉ. माधव सोनटक्के, पृष्ठ –11
2. [illegible] पत्र– पत्रिकाओं की हिंदी – [illegible] [illegible] अक्टूबर 2012 अंक (247) (समाचार
3. [illegible] – पृष्ठ 26
4. [illegible] – [illegible] पृष्ठ 57
5. [illegible] – [illegible] पृष्ठ [illegible]
6. हिंदी के अद्यतन अनुप्रयोग – डॉ. माधव सोनटक्के पृष्ठ [illegible]2

ISJ
International Science Journal
Peer-reviewed
www.sciencejournal.in
DAMA INTERNATIONAL

०४

विज्ञान और मानवीय मूल्य : देवेंद्र मेवाडी का विज्ञान कथा साहित्य

डॉ. के.बी. गंगणे
हिंदी विभागाध्यक्ष
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय
माजगाव जि. बीड ४३११३१

आज का युग वैज्ञानिक प्रगति के चरमोत्कर्ष का युग है। हर रोज वैज्ञानिक क्षेत्र में नये -नये अविष्कार हो रहे है । परिणाम स्वरूप मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान का प्रभाव दिखाई दे रहा है। एक प्रकार से कहें तो आज की मानव सभ्यता और मानवीय मूल्यों की आधार शिला के रूप में विज्ञान अपनी जड़े जमाने लगा है । विज्ञान की प्रगति से मानव जीवन तो सुखकर हुआ है लेकीन उसका दूसरा पक्ष मानव की बेलगाम महत्वकांक्षा, सपने और आकांक्षाओं ने जन्म लेना शुरू किया । परिणाम स्वरूप मानवीय जीवन में नैतिक, तात्त्विक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, धार्मिक (मानवतावादी) मुल्यों के स्तर पर -हास होने लगा । विज्ञान कथा साहित्य मानव मूल्य के स्तर पर आ रही गिरावट और विज्ञान-प्रोद्योगिकी की प्रगति के बीच संतुलन और समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगा है।

आज विश्व में मानव की मूल्यहिनता और विज्ञान- प्रौद्योगिकी की अतिवादिता से निर्मित समस्यओं को सुलझाने, विज्ञान का प्रचार-प्रसार करने, वैज्ञानिक सोच निर्माण करने, भविष्य में निर्माण होने वाली गंभीर समस्याओं से अवगत कराने और वैज्ञानिक मूल्यों की स्थापना करने के लिए विज्ञान कथा साहित्य अधिक मात्रा में लिखा जा रहा है। भारत में विज्ञान साहित्य का जितनी तेज गति से विकास होना चाहिए था, उतनी तेज गति से हो नहीं पाया । हिंदी साहित्य में बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध से विज्ञान साहित्य लेखन की शुरुआत हुई। जिसमें सुभाष चंद्र लखेडा, देवेंद्र मेवाडी, हरीश गोयल, मनिष मोहन गोरे, डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय, अरविंद मिश्र और जाकिर अली रजनीश का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

हिंदी विज्ञान कथा साहित्य में देवेंद्र मेवाडी का नाम बडे आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। विज्ञान कथा साहित्य में दिये योगदान को देखते हुए उन्हें राष्ट्रपति के कर कमलों से 'आत्माराम पुरस्कार ' से सम्मानित भी किया है। विज्ञान प्रोद्योगिकी की समझ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण आम जनों के प्रति हमदर्दी और प्रेमभाव,मानव और मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था और श्रध्दा का भाव उनकी विज्ञान कथाओं की विशेषताएँ हैं।

Volume - 7 Special Issue1, 2020, ISSN: 2348-604X (p); 2348-6058 (e), Impact Factor - 7.9 © 2020 DAMA International. Proceedings of the International Conference on Science & Science Fiction Organised by Shri Muktanand College, Gangapur, Aurangabad (MS) - India, 10th & 11th January, 2020. Editors reserve all rights.

४७

ISJ
International Science Journal
Peer-reviewed www.sciencejournal.in
DAMA INTERNATIONAL

देवेंद्र मेवाडी जी की 'सभ्यता की खोज विज्ञान कथा साहित्य में आपना विशेष महत्व रखती है जिसमें आज की विज्ञान - प्रोद्योगिकी (सायबरनेटिक्स विज्ञान) की प्रगति और मूल्यहीन बनती मानवीयता भविष्य में हमें कहाँ ले जायगी, इसका चित्र फित पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है। लेखक का दृष्टिकोण विज्ञान- प्रौद्योगिकी के विरोध में नहीं है, तो मानवीय मुल्यों में आ रही गिरावट के प्रति चिंता और चिंतन का है।

आज का बुध्दिमान मानव विज्ञान के सहारे प्रकृति और प्राकृतिक नियमों की सीमाओं को तोडकर उन पर विजय पाने की फिराक में है। विज्ञान- चिकित्सा उद्योग-धंदो, रक्षा- यातायात, कृषि जैसे अनेक क्षेत्रों में जोखिम भरे काम करने के लिए बुध्दिमान रोबों का प्रयोग तो रहा है। अगर भविष्य में सभी काम रोबो ही करेंगे तो इन्सान को इस ग्रह पर कोई काम करने लायक बचेगा ही नहीं ।क्या नई मशीनी सभ्यता का विकास मानव के लिए लाभदाई हो सकता है। मशीनों से नियंत्रित व्यवस्था का इस्तेमाल विध्वंसकारी प्रवृति के लोग अपने जरा से स्वार्थ, वैमनस्य, सत्तालोलुपता, क्रोध अहंकार और अविश्वासनियता के भंवर में आकर नहीं करेंगे ? इन सभी प्रश्नों के उत्तर संवेदनशील मानव को उद्विग्न करने लगे है। मशीनी सभ्यता की ओर संकेत करता हुआ परग्रहवासी नंबर १ (रोबो) कहानी के नायक अंतरिक्ष यात्री शेखर को कहता है- ' हम एक सभ्यता के चरमोत्कर्ष पर पहुँचते और उसका पतन होते हुए देख चुके हैं आपकी पृथ्वी इसका अपवाद कैसे हो सकती है ? क्या वहाँ विध्वंसकारी प्रवृत्ति के लोग नहीं है? क्या वे अपनी प्रगति के साथ - साथ शांति के नाम पर विनाश का सामान नहीं जुटाते ? ''[१]

आज हम प्रगति के नाम पर विनाश की ओर जा रहे हैं। मानव प्रगति की समस्याएँ वास्तविक रुप से विज्ञान-प्रौद्योगिकी विकास के साथ जुडी है। पंडीत नेहरू ने भी अपने समय की समस्याओं का मूल कारण वताते हुए 'डिसकवरी ऑफ इंडिया' में लिखा है- 'हमारे सामने जो समस्याएँ पैदा हुई है, वे असल में व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन मिल-जुलकर रहने, आदमी की भीतरी और बाहरी जिंदगी में ताल-मेल बिटाने, व्यक्ति और समाज के बीच सामंजस्य रखने लगातार अपने अंदर सुधार करके उपर तथा और भी उपर उठने तथा सामाजिक विकास और मानव के अथक साहस से जुडी रहे ।''[२]

'कोख' नामक विज्ञान कथा में विज्ञान की नयी खोज 'परखनली शिशु' (टेस्टट्यूब बेबी) (इन विट्रो फर्टिलाइजेशन तकनीकी) को लेकर भारतीय समाज में जो संभ्रम और संशय का वातावरण निर्माण हुआ है उसको दूर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। विज्ञान की प्रगति से टेस्टट्यूब बेबी शोध सफल हुआ । सपने हकीकत में वदल गया तो विश्व भर में करोडों सुनी कोख भरने की आशा पल्लवित हुई । लेखक भी अपनी डायरी में लिखता है - 'न जाने कितने सपने बुने हैं आदमी ने ! और खुदा झूठ न बुलवाए सपनों को सच्चाई में भी वदला है । इसमें कोई शक नहीं है कि, कल परखनलियों में बच्चे पैदा होने लगे और आदमी की कलम तैयार हो जाए! अब बताइए, यही कौन जानता था कल तक कि, परखनली में इन्सान का बीज बोया जा सकता है ?''[३] लेकिन भारतीय समाज में अज्ञान, अंधश्रद्धा, दैववादिता, शिक्षा और विज्ञान के प्रचार

ISJ
International Science Journal
Peer-reviewed
www.sciencejournal.in
DAMA INTERNATIONAL

प्रसार का अभाव होने के कारण इस प्रकार की वैज्ञानिक खोज को लेकर नैतिकता और अनैतिकता के कई प्रश्न निर्माण हो रहे हैं। आज धाय माँ (सरोगेट मदर) बनने का अर्थ ग्रामीण भारत में पराए पुरुष के साथ संबध रखने के साथ लिय जा रहा है। जिसे एक प्रकार का व्यभिचार और अधर्म माना जा रहा है। जिससे धाय माँ बनने के लिये कोई तैयार नही है। 'कोख' कथा का नायक विनय शर्मा ओर उनकी पत्नी सुमन शर्मा दोनों को अपने बच्चें को जन्म देने के लिए धाय माँ नही मिल रही है। रिश्तेदार व्यभिचारी कहकर रिश्ता तोड़ते हैं तो कामवाली सुमन शर्मा को डराती हुई कहती है - 'लोग कह रहे हैं कि आप दोनों किसी दूसरी औरत से बच्चा पैदा कराने की सोच रहे है ? आप तो खूद औरत है आपने कैसे मान ली यह बात? आपका मरद दूसरी औरत से बच्चा पैदा कराने की बात कर रहा है और आप चुप बैठी है ? कल उसको घर में बिठा लेंगे बाबूजी और आप देखती रह जायेगी, हाँ ?'[४]

धाय माँ को लेकर भारत में कानुनी समस्या भी बरकरार है कहानी में इस पर भी विस्तृत प्रकाश डाला है। कभी - कभी अपवादात्मक स्थिति में धाय माँ ब्लैकमेल करके पैसा भी निकालती है। ऐसी स्थिति में न्याय मिलने की संभावना भी कम ही रहती है ।

'अंतीम प्रवचन ' इस कथा के माध्यम से ' मानवी क्लोन ' की वैज्ञानिक विधी को समझाकर पाठक की जिज्ञासाओं का समाधान महत्वपूर्ण कार्य किया है, तो दूसरी तरफ आध्यात्म के क्षेत्र में मानवी क्लोन के दुरूपयोग से निर्माण होनेवाली संभावित समस्याओं के प्रति पाठक के सचेत भी किया है ।

मेंढक चुहे के क्लोन के सफलता से 'मानवी क्लोन' आर्थात हु-ब-हु मानव की प्रतिकृति या प्रतिलिपि बनाने का वैज्ञानिकों का प्रयास है। मानवी क्लोन को लेकर आज विश्व में अलग-अलग चर्चाएँ हैं। एक प्राकृतिक नियमों को छेद देना उचित नही है। उनसे सामाजिक प्रश्न निर्माण हो सकते हैं । इसी को ध्यान में रखते हुए अनेक देशो में इस पर प्रतिबंध लगाया है। पद प्रतिष्ठा धन के लालच में गुप्त रूप से वैज्ञानिक मानवी क्लोन तैयार नही करेंगे इसका क्या भरोसा है ? काहानी का नायक वैज्ञानिक डॉ सुरजभान को जब स्वामी जीवानंद सब कुछ देने के लिये तैयार होते है तब अपनी सारी नैतिकता ताक पर रखते हुए कहता है - ' ठिक है स्वामी जी, मैं तैयार हु। यह काम चुपचाप होगा, इसलिए इसकी जानकारी किसी और को नही होनी चाहिए मैं नही चाहता कि किसी तरह का बखेडा खडा हो। '[५]

विज्ञान में समाज बदलने की सबसे बडी शक्ति होती है। डी.एन.ए छाप आर्थात डी. एन ए फिंगर - प्रिंटींग की विधी आज विज्ञान के व्दारा विकसित इस शोध ने कानुनी जगत में अमुलाग्र परिवर्तन किया है इसका चित्रण 'पिता' इस कहानी में किया गया है। कहानी की नायिका रत्ती को अपने बच्चे की माँ तो डी एन ए छाप अर्थात डी एन ए फिंगर प्रिंटींग की विधी व्दारा सिध्द होती है, लेकिन उसका पिता कोई और निकलता है। जिसके बारें में रत्ती भी विश्वास के साथ बता नही पाती लेकिन उसे ढूंढने का विश्वास डी एन ए छाप अर्थात डी एन ए फिंगर प्रिटींग की विधी ने वकील और रत्ती को दिया है। यह केवल विज्ञान की वजह से ही सम्भव हुआ हैं।

Volume - 7 Special Issue1, 2020, ISSN: 2348–604X (p); 2348–6058 (e), Impact Factor - 7.9 © 2020 DAMA International
Proceedings of the International Conference on Science & Science Fiction Organised by Shri Mukatanand College Gangapur, Aurangabad (MS) - India, 10th & 11th January, 2020. Editors reserve all rights.

8

ISJ
International Science Journal
Peer-reviewed www.sciencejournal.in

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट किया जा सकता है कि देवेंद्र मेवाडी एक सशक्त विज्ञान कथा लेखक है उन्होंने अपने साहित्य में वर्तमान में विकसित विज्ञान प्राद्योगिकी हर खोज और आविष्कार की विधी पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है जिसकी वजह से समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और उसकी समझ विकसित होने में मदद होने लगी है। वैज्ञानिक प्रगति के दुष्परिणाम ओर मानवीय मूल्यों के अधःपतन के अपर भी प्रकाश डाला है।

संदर्भ :

१) देवेंद्र मेवाडी, भविष्य पृष्ठ क्र. ३६-३७
१. पुष्पा मित्र भार्गव,चंदना चक्रवर्ती, अनुवाद अनुराम शर्मा, देवदूत ,शैतान और विज्ञान पृष्ट क्र.१७२
२. देवेंद्र मेवाडी,मेरी विज्ञान डायरी, पृष्ठ क्र. १२०
३. देवेंद्र मेवाडी, कोख पृष्ठ क्र.११
४. देवेंद्र मेवाडी , कोख पृष्ठ क्र.८७